Think
IAS...

दृष्टि
The Vision

Think
Drishti

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)

आधुनिक भारत

(उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ सहित)

भाग–2

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम *(Distance Learning Programme)*

Code: UPPM02

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)

आधुनिक भारत

(उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ सहित)

भाग–2

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

दूरभाष : 011-47532596, 8750187501

टोल फ्री : 1800-121-6260

Web : www.drishtiIAS.com

E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को “like” करें

www.facebook.com/drishtithevisionfoundation

www.twitter.com/drishtiias

UPPCS DLP

विषय सूची (Contents)

9.	**गांधी युग : 1919-1948 ई.**	**5-55**
9.1	गांधीवादी आंदोलन (प्रथम चरण)	5
9.2	गांधी की विचारधारा, रणनीति, कार्यपद्धति	13
9.3	क्रांतिकारी आंदोलन का द्वितीय चरण	16
9.4	गांधीवादी आंदोलन (द्वितीय चरण)	18
9.5	भारत शासन अधिनियम, 1935	27
9.6	कॉन्ग्रेस में समाजवादी विचारधारा का उद्भव	29
9.7	राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की सहभागिता	31
9.8	देशी रियासतों में जन आंदोलन	33
9.9	द्वितीय विश्वयुद्ध और राष्ट्रीय आंदोलन	34
9.10	विभाजन के साथ स्वतंत्रता की दिशा में	39
10.	**भारत में संवैधानिक विकास**	**56-69**
11.	**भारत के गवर्नर जनरल तथा वायसराय**	**70-82**
11.1	बंगाल के गवर्नर	70
11.2	बंगाल के गवर्नर जनरल	70
11.3	भारत के गवर्नर जनरल	73
11.4	भारत के वायसराय	74
12.	**आज़ादी के बाद का प्रारंभिक दौर**	**83-97**
12.1	देशी रियासतों का एकीकरण	83
12.2	पुर्तगाली उपनिवेशों का विलय	89
12.3	शरणार्थियों की समस्या	90
12.4	सांप्रदायिक हिंसा की समस्या	92
13.	**राष्ट्र के गठन में विविध समस्याएँ**	**98-116**
13.1	भाषायी समस्या	99
13.2	राज्यों का पुनर्गठन	101
13.3	जनजातीय समुदाय की समस्याएँ	105
13.4	क्षेत्रीय असमानता के मुद्दे	108
13.5	अल्पसंख्यकों और दलितों से संबंधित समस्याएँ	111

14. विदेश नीति का नेहरू युग **117-129**
14.1 भारत की विदेश नीति और पंचशील समझौता 117
14.2 भारतीय विदेश नीति की अंतर्राष्ट्रीय भूमिका 119
14.3 भारत का पड़ोसियों के साथ संबंध 121
14.4 गुटनिरपेक्ष आंदोलन 125
14.5 संयुक्त राष्ट्र संघ और भारत 126
15. 1947–64 के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था **130-137**
15.1 आर्थिक विकास के प्रारंभिक विचार (स्वतंत्रता पूर्व एवं पश्चात्) 130
15.2 स्वतंत्र भारत की औद्योगिक नीति 132
15.3 पहली तीन पंचवर्षीय योजनाएँ 133
16. भारत : चीन व पाकिस्तान से युद्ध **138-146**
16.1 भारत–चीन युद्ध की पृष्ठभूमि एवं घटनाक्रम 138
16.2 भारत–चीन युद्ध के निष्कर्ष व परिणाम 140
16.3 भारत–पाक युद्ध की पृष्ठभूमि 142
16.4 ताशकंद समझौता 144
17. स्वतंत्र भारत में भूमि–सुधार **147-164**
17.1 ब्रिटिश भारत में भूमि अधिकार प्रणाली 147
17.2 ज़मींदारी उन्मूलन एवं काश्तकारी सुधार 151
17.3 भूदान एवं ग्रामदान आंदोलन 155
17.4 हरित क्रांति 160

अध्याय
9

गांधी युग : 1919-1948 ई.
(Gandhian Era : 1919-1948 AD)

मोहनदास करमचंद गांधी (1869–1948 ई.) 9 जनवरी, 1915 को दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस आए। वे 1893 ई. में एक भारतीय मुस्लिम व्यापारी दादा अब्दुल्ला का मुकदमा लड़ने दक्षिण अफ्रीका गए थे। वहाँ पर उन्होंने भारतीयों के साथ हो रहे भेदभावपूर्ण व्यवहार को देखा। एक बार जब वे दक्षिण अफ्रीका में ट्रेन से यात्रा कर रहे थे तो उसी दौरान 'मेरित्सबर्ग' नामक स्टेशन पर एक अंग्रेज़ ने उन्हें धक्का देकर ट्रेन से बाहर निकाल दिया। इस घटना से गांधी जी को एक नई दिशा मिली। अपने दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान ही गांधी जी ने भारतीयों के प्रति अपनाई जाने वाली रंगभेद की नीतियों के विरुद्ध संघर्ष प्रारंभ किया।

9.1 गांधीवादी आंदोलन (प्रथम चरण) *[Gandhian Movement (1st Phase)]*

गांधीजी ने अपने आंदोलन को संगठनात्मक रूप प्रदान करने तथा दिशा देने हेतु उन्होंने कई संस्थाओं, जैसे- नटाल इंडियन कॉन्ग्रेस, टॉलस्टाय फार्म (जर्मन शिल्पकार मित्र कालेन बाख की सहायता से) तथा फीनिक्स आश्रम की स्थापना की। दक्षिण अफ्रीका में ही गांधी जी ने 'इंडियन ओपीनियन' नामक समाचार-पत्र का प्रकाशन भी किया। गांधी जी द्वारा दक्षिण अफ्रीका में सफलतापूर्वक आंदोलन का संचालन किये जाने के परिणामस्वरूप वहाँ की सरकार द्वारा सन् 1914 ई. तक अधिकांश भेदभावपूर्ण काले कानूनों को रद्द कर दिया गया। यह गांधी जी की प्रथम सफलता थी जो उन्होंने अहिंसा के मार्ग द्वारा प्राप्त की।

1915 ई. में भारत आने के पश्चात् ही गांधी जी का भारतीय राजनीति में पदार्पण हुआ। गांधी जी ने गोपालकृष्ण गोखले को अपना राजनीतिक गुरु माना। गोखले ने गांधी को आदेशित किया था कि वह भारत में प्रथम वर्ष खुले कान पर मुँह बंद कर व्यतीत करें। इस समय प्रथम विश्वयुद्ध चल रहा था तथा गांधी जी ने इस युद्ध में अंग्रेज़ों का समर्थन किया और भारतीयों को सेना में शामिल होने के लिये प्रोत्साहित किया। इसी कारण उन्हें 'भर्ती करने वाला सार्जेंट' कहा जाने लगा। ब्रिटिश सरकार ने उन्हें कैसर-ए-हिंद की उपाधि से विभूषित किया। गांधी जी का मानना था कि प्रथम विश्वयुद्ध में सहयोग के बदले भारतीयों को स्वराज की प्राप्ति होगी। गांधी जी ने 1915 ई. में अहमदाबाद में साबरमती आश्रम की स्थापना की। इसका उद्देश्य रचनात्मक कार्यों को प्रोत्साहन देना था। गांधी जी का भारतीय राजनीति में एक प्रभावशाली नेता के रूप में उदय उत्तर बिहार के चंपारण आंदोलन, गुजरात के खेड़ा कृषक आंदोलन तथा अहमदाबाद के श्रमिक विवाद का सफलतापूर्वक नेतृत्व करने के पश्चात् हुआ। जहाँ चंपारण और खेड़ा आंदोलन कृषकों की समस्याओं से संबंधित थे, वहीं अहमदाबाद के श्रमिकों के विवाद की पृष्ठभूमि में कॉटन टेक्सटाइल मिल-मालिक और मज़दूरों के बीच मज़दूरी बढ़ाने तथा प्लेग बोनस दिये जाने से संबंधित विवाद था। अहमदाबाद में प्लेग की समाप्ति के पश्चात् मिल-मालिक बोनस को समाप्त करना चाहते थे। मिल-मालिकों ने केवल 20% बोनस को स्वीकार किया और धमकी दी कि जो कर्मचारी यह बोनस नहीं स्वीकार करेगा उसे नौकरी से निकाल दिया जाएगा। गांधी जी 35% बोनस दिये जाने की मज़दूरों की मांग का समर्थन करते हुए स्वयं हड़ताल पर बैठ गए। इस पूरे प्रकरण पर न्यायाधिकरण ने भी मज़दूरों की मांग को सही ठहराते हुए 35% बोनस दिये जाने का आदेश दिया। इन मिल-मालिकों में से एक गांधी जी के मित्र अंबालाल साराभाई भी थे, जिन्होंने साबरमती आश्रम के निर्माण हेतु बहुत अधिक मात्रा में धन दान दिया था। अंबालाल साराभाई की बहन अनुसुइया भी अहमदाबाद मज़दूर आंदोलन में गांधी जी के साथ थीं।

सत्याग्रह के आरंभिक प्रयोगों की सफलता ने गांधी जी को जनसाधारण के समीप ला खड़ा किया। गांधी जी के आदर्शों, दार्शनिक चिंतन, विचारधारा और जीवन-पद्धति ने उन्हें साधारण जनता के जीवन के साथ एकीकृत कर दिया। वे गरीब, राष्ट्रवादी एवं विद्रोही भारत के प्रतीक बन गए। हिंदू-मुस्लिम एकता, स्त्रियों की सामाजिक स्थिति को सुधारने तथा छुआछूत के विरुद्ध कार्य करना उनके अन्य प्रमुख लक्ष्यों में सम्मिलित थे। 1919 ई. के जलियाँवाला बाग हत्याकांड ने ब्रिटिश सरकार के प्रति गांधी जी के दृष्टिकोण को परिवर्तित कर दिया।

- प्रथम अखिल भारतीय समाजवादी युवा कॉन्ग्रेस के सभापति जवाहर लाल नेहरू थे।
- गांधीजी के साप्ताहिक पत्र हरिजन का प्रथम अंक 11 फरवरी, 1933 को पूना से प्रकाशित किया गया।
- 'गोखले : माई पॉलिटिकल गुरू' पुस्तक एम.के. गांधी ने लिखा था।
- गांधीवादी विचारधारा रस्किन, थोरो एवं टॉल्स्टाय से प्रभावित रही है। गांधी के अनुसार राजनीति का तात्पर्य जनकल्याण के लिये सक्रियता होना चाहिये।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित नहीं है? **UPPCS (Mains) 2017**
   (a) दिल्ली षड्यंत्र केस - अमीरचंद
   (b) काकोरी षड्यंत्र केस- अशफाक उल्ला
   (c) लाहौर षड्यंत्र केस - जतिन दास
   (d) नासिक षड्यंत्र केस - रासबिहारी बोस

2. 1919 के सुधारों की भारतीयों की आकांक्षाओं को पूर्ण करने में असफलता के साथ भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस ने 'स्वराज' अथवा 'स्वशासन' हेतु आंदोलन किया, नेतृत्व में– **UPPCS (Mains) 2017**
   (a) महात्मा गांधी के
   (b) जी.के. गोखले के
   (c) बाल गंगाधर तिलक के
   (d) मोतीलाल नेहरू के

3. निम्नलिखित में से कौन-सा एक असहयोग आंदोलन को प्रारंभ करने का कारण नहीं था? **UPPCS (Mains) 2017**
   (a) खिलाफत का प्रश्न
   (b) नमक कानून
   (c) पंजाब में अत्याचार
   (d) रौलट एक्ट

4. निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिये: **UPPCS (Mains) 2017**
   1. क्रिप्स मिशन
   2. अगस्त प्रस्ताव
   3. नेहरू रिपोर्ट
   4. वेवेल प्लान

   इन घटनाओं का सही कालनुक्रम है:-
   कूट:
   (a) 3, 1, 2, 4 (b) 3, 2, 1, 4
   (c) 2, 1, 3, 4 (d) 1, 3, 2, 4

5. निम्नलिखित में से किस वर्ष बंगाल के मिदनापुर ज़िले में जातिया सरकार की स्थापना हुई थी? **UPPCS (Pre) 2017**
   (a) 1939 (b) 1940
   (c) 1941 (d) 1942

6. निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिये: **UP (RO/ARO) Pre 2017**
   1. अगस्त प्रस्ताव
   2. पूना समझौता
   3. तृतीय गोलमेज सम्मेलन
   4. सांप्रदायिक निर्णय

   उपरोक्त घटनाओं को कालक्रमानुसार व्यवस्थित कीजिये और नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर चुनिये:
   कूट:
   (a) 4, 3, 2, 1 (b) 4, 2, 3, 1
   (c) 2, 1, 3, 4 (d) 3, 2, 1, 4

7. 'ऑपरेशन रूबिकॉन' वह कूट शब्द था जिसे भारत में ब्रिटिश सरकार द्वारा निम्नलिखित में से किस संदर्भ में प्रयोग लाया जाना था? **UP (RO/ARO) Pre 2017**
   (a) जेल में गांधी का आमरण अनशन
   (b) जयप्रकाश नारायण की गतिविधियाँ
   (c) गोलमेज सम्मेलन में गांधी की सहभागिता
   (d) उपरोक्त में से कोई नहीं।

8. निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिये- **UP (RO/ARO) Pre 2017**
   1. गांधी-इर्विन समझौता
   2. सांप्रदायिक पंचाट (निर्णय)
   3. द्वितीय गोलमेज सम्मेलन
   4. नेहरू रिपोर्ट

उपरोक्त घटनाओं को उनके कालक्रमानुसार व्यवस्थित कीजिये तथा नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर चुनिये:

कूट:

(a) 3, 2, 1, 4 (b) 3, 1, 4, 2

(c) 4, 3, 2, 1 (d) 4, 1, 3, 2

9. सुभाष चंद्र बोस का राजनीतिक गुरु कौन था?
UP (RO/ARO) Pre 2017

(a) जी. के. गोखले

(b) सी.आर.दास

(c) बी.सी.पाल

(d) बी.जी.तिलक

10. निम्नलिखित में से कौन उग्र राष्ट्रवादी नेता नहीं था?
UPPCS (Mains) 2016

(a) बिपिन चंद्र पाल

(b) बी.जी. तिलक

(c) लाला लाजपत राय

(d) जी. के. गोखले

11. खिलाफत आंदोलन के प्रमुख नेता निम्नलिखित में से कौन थे? **UPPCS (Pre) 2016**

(a) मौलाना मुहम्मद अली और सौकत अली

(b) मोहम्मद अली जिन्नाह और सौकत अली

(c) मौलाना अबुल कलाम आज़ाद और रफी अहमद किदवई

(d) रफी अहमद किदवई और सौकत अली

12. मोतीलाल नेहरू और सी.आर.दास द्वारा 1923 ई. में गठित पार्टी का नाम क्या था? **UPPCS (Pre) 2016**

(a) इंडिपेंडेंस पार्टी

(b) गदर पार्टी

(c) स्वराज पार्टी

(d) इण्डियन नेशनल पार्टी

13. अंग्रेज़ों के विरुद्ध खान अब्दुल गफ्फार खान द्वारा प्रारंभ किये गए आंदोलन का नाम क्या था?
UPPCS (Pre) 2016

(a) लाल कुर्ती (रेड शर्ट)

(b) क्विट इंडिया

(c) खिलाफत

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

14. निम्नलिखित में से किसके विरोध में रवींद्रनाथ टैगोर ने अपनी 'नाइटहुड' की उपाधि का परित्याग कर दिया था?
UPPCS (Pre) 2016

(a) रौलेट ऐक्ट

(b) जालियांवाला बाग जनसंहार

(c) साइमन कमीशन

(d) क्रिप्स मिशन

15. अगस्त 1925 में सेंट्रल लेजिस्लेटिव एसेम्बली का अध्यक्ष निम्नलिखित में से कौन था?
UP (RO/ARO) Pre 2016

(a) सी.आर. दास (b) मोतीलाल नेहरू

(c) एम. आर. जयकर (d) विट्ठलभाई पटेल

16. निम्नलिखित में से दांडी मार्च' में महात्मा गांधी के साथ था? **UPPCS (Mains) 2015**

(a) एच.एन. ब्रेल्सफोर्ड (b) वेब मिलर

(c) जी.स्लोकोम्ब (d) जेम्स पेटर्सन

17. गांधीजी को 'वन मैन बाउंडरी फोर्स' कहकर किसने संबोधित किया? **UPPCS (Mains) 2015**

(a) चर्चिल ने (b) एटली ने

(c) माउंटबेटन ने (d) साइमन ने

18. निम्नलिखित में से किसने 31 दिसंबर, 1928 को दिल्ली में हुए सर्वदलीय मुस्लिम सम्मेलन की अध्यक्षता की थी? **UPPCS (Mains) 2015**

(a) आगा खाँ (b) एम.ए.जिन्ना

(c) फजली हुसैन (d) करीम जलाल

19. निम्नलिखित में किसने "सत्याग्रह" शब्द को गढ़ा?
UPPCS (Mains) 2015

(a) हरिलाल गांधी (b) महात्मा गांधी

(c) रामदास गांधी (d) माजिलाल गांधी

20. निम्नलिखित में से कौन काकोरी कांड मुकदमे में सरकारी वकील था? **UPPCS (Mains) 2015**

(a) मोहनलाल सक्सेना

(b) जगत नारायण मुल्ला

(c) कृष्णा बहादुर

(d) प्रभात चंद्र

21. महात्मा गांधी ने भारत में अपना पहला जनभाषण कहाँ दिया था? **UPPCS (Mains) 2015**

(a) बम्बई में (b) लखनऊ में

(c) चंपारण में (d) वाराणसी में

22. निम्नलिखित में से किसने कहा था "स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है"? **UPPCS (Mains) 2015**
(a) एम.के. गांधी (b) जी.के. गोखले
(c) बी.जी. तिलक (d) दादाभाई नौरोजी

23. 'कामागाटामारू' क्या था? **UPPCS (Pre) (Re-exam) 2015**
(a) औद्योगिक केंद्र (b) एक बंदरगाह
(c) एक जहाज़ (d) सेना की टुकड़ी

24. 1946 के 'कैबिनेट-मिशन' का नेतृत्व किया गया था– **UPPCS (Pre) (Re-exam) 2015**
(a) सर पेंथिक लॉरेंस द्वारा
(b) लॉर्ड लिनलिथगो द्वारा
(c) लार्ड वेवेल द्वारा
(d) सर जॉन साइमन द्वारा

25. वर्ष 1929 में जारी किये गए 'दीपावली घोषणा पत्र' का संबंध था– **UPPCS (Pre) (Re-exam) 2015**
(a) सांप्रदायिक समस्या से
(b) डोमिनियन स्टेटस से
(c) श्रमिक नेताओं से
(d) अस्पृश्यता से

26. 8 अगस्त, 1942 में कॉन्ग्रेस ने भारत छोड़ो आंदोलन कहाँ प्रारंभ किया था? **UPPCS (Lower) Pre 2015**
(a) बम्बई (b) मद्रास
(c) कलकत्ता (d) पूना

27. इनमें से किसने 'रानी लक्ष्मीबाई रेजिमेंट' की स्थापना की? **UPPCS (Lower) Pre 2015**
(a) रासबिहारी बोस (b) वल्लभभाई पटेल
(c) लक्ष्मी स्वामीनाथन (d) सुभाषचंद्र बोस

28. 1935 का गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट क्यों महत्त्वपूर्ण है? **UPPCS (Lower) Pre 2015**
(a) यह भारतीय संविधान का प्रमुख स्रोत है
(b) इसके द्वारा भारत को स्वतंत्रता मिली
(c) इसमें भारत विभाजन उल्लिखित है
(d) इसके द्वारा रियासतें समाप्त हुईं

29. इन व्यक्तियों में से कौन कैबिनेट मिशन का सदस्य नहीं था? **UPPCS (Lower) Pre 2015**
(a) विलियम वुड
(b) पेंथिक लॉरेन्स
(c) स्टैफोर्ड क्रिप्स
(d) ए.बी. एलेक्जेंडर

30. इंडियन नेशनल मूवमेंट: दि लॉन्ग टर्म डाइनैमिक्स के लेखक हैं– **UPPCS (Lower) Pre 2015**
(a) सतीशचंद्र
(b) बिपिनचंद्र
(c) ताराचंद
(d) सुमित सरकार

31. निम्नलिखित में से किस एक ने खिलाफत आंदोलन के दौरान हाजिक्-उल-मुल्क की पदवी त्याग दी थी? **UPPCS (Mains) 2014**
(a) मौलाना अबुल कलाम आज़ाद
(b) मोहम्मद अली
(c) शौकत अली
(d) हकीम अजमल खान

32. अमृतसर के भारतीय कॉन्ग्रेस अधिवेशन, 1919 के प्रस्ताव के अनुसार महात्मा गांधी द्वारा कॉन्ग्रेस का नया संविधान लिखने हेतु निम्नलिखित में से किन्हें सहयोग हेतु चुना गया? **UPPCS (Mains) 2014**
1. बी.जी. तिलक 2. एन.सी.केलकर
3. सी.आर.दास 4. आई.बी.सेन
नीचे दिये हुए कूट से सही उत्तर चयन कीजिये:
कूट:
(a) केवल 2 एवं 4 (b) केवल 1 एवं 2
(c) केवल 3 एवं 4 (d) केवल 1 एवं 3

33. निम्न में से किसने यह लिखा था, "भारत की मुक्ति महात्मा गांधी के नेतृत्व में नहीं होंगी?" **UPPCS (Mains) 2014**
(a) एम. ए. जिन्ना
(b) क्लीमेंट रिचर्ड एटली
(c) विंस्टन चर्चिल
(d) सुभाष चंद्र बोस

34. निम्न में से किसने महात्मा गांधी को आदेशित किया था कि वह भारत में प्रथम वर्ष 'खुले कान पर मुँह बंद कर' व्यतीत करें? **UPPCS (Mains) 2014**
(a) दादाभाई नौरोजी
(b) बाल गंगाधर तिलक
(c) फिरोजशाह मेहता
(d) गोपाल कृष्ण गोखले

35. जालियाँवाला बाग नरसंहार पर कॉन्ग्रेस जाँच समिति की रिपोर्ट के प्रारूप लिखने का कार्य सौंपा गया था–
UPPCS (Pre) 2014
(a) जवाहरलाल नेहरू को
(b) महात्मा गांधी को
(c) सी.आर.दास को
(d) फजलुल हक को

36. महात्मा गांधी के साथ निम्न मुसलमानों में से किसने बाल गंगाधर तिलक की अर्थी उठाई थी?
UPPCS (Pre) 2014
(a) शौकत अली
(b) मोहम्मद अली
(c) मौलाना ए.के. आज़ाद
(d) एम.ए.अंसारी

37. 'इंडियन ओपीनियन' पत्रिका के प्रथम संपादक थे–
UPPCS (Pre) 2014
(a) एम.के. गांधी (b) अलवर्ट वेस्ट
(c) महादेव देसाई (d) मनसुखलाल नज़र

38. महात्मा गांधी ने अपनी निम्न पुस्तकों में से किसमें ब्रिटिश पार्लियामेंट को बाँझ और वेश्या कहा है?
UPPCS (Pre) 2014
(a) सर्वोदय अथवा यूनिवर्सल डॉन
(b) एन ऑटोबायोग्राफी ऑर दी स्टोरी ऑफ माई एक्सपेरिमेंट विथ ट्रूथ
(c) हिंद स्वराज
(d) दी स्टोरी ऑफ ए सत्याग्रही

39. अपनी फाँसी से पूर्व निम्नलिखित क्रांतिकारियों में से किस एक ने पीने हेतु दिये गए दूध को अस्वीकार कर दिया और कहा,
"अब मैं केवल अपनी माँ का दूध लूँगा।"?
UPPCS (Pre) 2014
(a) राजगुरु (b) अशफाकुल्ला
(c) रामप्रसाद बिस्मिल (d) भगत सिंह

40. निम्नलिखित में से किसने गांधी-इर्विन समझौते में महात्मा गांधी के लाभ को 'सांत्वना पुरस्कार' कहा था?
UPPCS (Pre) 2014
(a) एस.सी. बोस
(b) एलन कैम्पबेल जॉनसन
(c) बी.जी. हार्निमन
(d) सरोजनी नायडू

41. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये और सूचियों के बीचे दिये गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये। **UPPCS (Pre) 2014**

सूची-I	**सूची-II**
A. बिनोबा भावे	1. होमरूल आंदोलन
B. बी.जी. तिलक	2. वैयक्तिक सत्याग्रह
C. अरुणा आसफ अली	3. धरसना रेड
D. सरोजनी नायडू	4. भारत छोड़ो आंदोलन

कूट:

	A	B	C	D
(a)	2	1	4	3
(b)	1	2	3	4
(c)	4	3	2	1
(d)	1	2	4	3

42. काकोरी केस के अभियुक्तों के बचाव हेतु किसकी अध्यक्षता में एक समिति का गठन हुआ था?
UPPCS (Pre) 2014
(a) आचार्य नरेंद्र देव
(b) गोबिंद बल्लभ पंत
(c) चन्द्रभानु गुप्त
(d) मोतीलाल नेहरू

43. बी.जी. तिलक की सज़ा के पश्चात् निम्नलिखित में से किसने दया की वकालत की थी और कहा था–
"संस्कृत के एक विद्वान के रूप में तिलक में मेरी दिलचस्पी है।" **UPPCS (Pre) 2014**
(a) रवीन्द्रनाथ टैगोर
(b) मैक्स मुलर
(c) बिपिनचंद्र पाल
(d) विलियम जोन्स

44. निम्नलिखित में से कौन एक सही सुमेलित नहीं है?
UPPCS (Pre) 2014
(a) भगत सिंह: दी इंडियन सोशियोलोजिस्ट
(b) सचीन्द्रनाथ सान्याल : बंदी जीवन
(c) लाला रामसरन दास : दी ड्रीमलैंड
(d) भगवती चरण वोहरा : दी फिलॉसफी ऑफ बम

45. ब्रिटिश सरकार द्वारा लंदन में भारतीय नेताओं का प्रथम गोलमेज सम्मेलन कब बुलाया गया?
UP (RO/ARO) Mains 2014
(a) 1931 (b) 1929
(c) 1930 (d) 1932

46. भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 प्रभावी हुआ था–
UP (RO/ARO) Pre 2014
(a) जुलाई 4, 1947 को
(b) जुलाई 10, 1947 को
(c) जुलाई 18, 1947 को
(d) अगस्त 14, 1947 को

47. स्वतंत्रता का नव-ग्रहीत तिरंगा पहली बार कब लहराया गया? **UP (RO/ARO) Pre 2014**
(a) 31 दिसंबर,1928 (b) 31 दिसंबर, 1929
(c) 31 दिसंबर, 1930 (d) 31 दिसंबर, 1931

48. इनमें से कौन उग्र राष्ट्रवाद के उल्लेखनीय नेताओं में से नहीं था? **UP (RO/ARO) Pre 2014**
(a) गोपाल कृष्ण गोखले
(b) बिपिन चंद्र पाल
(c) लोकमान्य तिलक
(d) लाला लाजपत राय

49. गदर पार्टी का मुख्यालय था–
UP (RO/ARO) Pre 2014
(a) सैन फ्रांसिस्को में (b) न्यूयॉर्क में
(c) मद्रास में (d) कलकत्ता में

50. "शक्ति के विरुद्ध अधिकार की इस लड़ाई में मैं विश्व की सहानुभूति चाहता हूँ।" यह कथन किससे संबद्ध है?
UPPCS (Mains) 2013
(a) असहयोग आंदोलन से
(b) गांधी की दांडी यात्रा से
(c) वैयक्तिक सत्याग्रह से
(d) भारत छोड़ो आंदोलन से

51. गांधीवादी अर्थव्यवस्था किस पर आधारित है?
UPPCS (Pre) 2013
(a) प्रतिस्पर्धा पर
(b) न्यास पर
(c) राज्य नियंत्रण पर
(d) इनमें से किसी पर नहीं

52. निम्नलिखित में से भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के किस अधिवेशन में महात्मा गांधी ने कहा था, "गांधी मर सकते हैं, परंतु गांधीवाद हमेशा बना रहेगा"?
UPPCS (Pre) 2013
(a) कलकत्ता अधिवेशन-1928
(b) लाहौर अधिवेशन-1929
(c) मद्रास अधिवेशन-1927
(d) कराची अधिवेशन-1931

53. गांधीजी द्वारा शुरू किया गया एक साप्ताहिक पत्र 'हरिजन' का प्रथम अंक 11 फरवरी, 1933 को निम्न शहरों में से कहाँ से प्रकाशित किया गया?
UPPCS (Lower) Mains 2013
(a) बंबई (आज मुंबई) से
(b) अहमदाबाद से
(c) पूना (आज पुणे) से
(d) नासिक से

54. निम्न में से किस वर्ष में एम.के. गांधी ने हिंद स्वराज लिखी? **UPPCS (Lower) Mains 2013**
(a) 1908 में (b) 1909 में
(c) 1910 में (d) 1914 में

55. गांधी के संदर्भ में निम्न में से कौन-सा सही है?
UPPCS (Lower) Mains 2013
(a) बिना मार्क्सवाद के मार्क्सवादी
(b) बिना समाजवाद के समाजवादी
(c) बिना व्यक्तिवाद के व्यक्तिवादी
(d) समाजवादियों में एक व्यक्तिवादी और समाजवादियों में एक मार्क्सवादी

56. 'गोखले माई पालिटिकल गुरु' पुस्तक किसने लिखी है?
UPPCS (Lower) Mains 2013
(a) एम.ए. जिन्ना ने (b) एम.के गांधी ने
(c) शौकत अली ने (d) सी.आर. दास ने

57. एम.के. गांधी के अनुसार अस्पृश्यों का सामाजिक-आर्थिक सुधार संपन्न किया जा सकता है–
UPPCS (Lower) Mains 2013
(a) उनके मंदिर प्रवेश द्वार
(b) उन्हें सहायता प्रदान करके
(c) उनके सामाजिक-आर्थिक विकास हेतु कोष अलग करके
(d) उनके लिये कुटीर उद्योग स्थापित करके

58. गांधीजी के ट्रस्टीशिप के सिद्धांत के प्रतिपाद्य के संबंध में निम्नलिखित युग्मों में से कौन-सा एक सही है?
UPPCS (Lower) Mains 2013
(a) दक्षिण अफ्रीका-1903
(b) लंदन - 1904
(c) दिल्ली - 1905
(d) अहमदाबाद -1906

59. गांधीवादी अर्थव्यवस्था के विषय में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक सही नहीं है?
UPPCS (Lower) Mains 2013
(a) वे अहिंसा पर आधारित अर्थव्यवस्था पर बल देते थे।
(b) केंद्रीकरण शोषण और असमानता को जन्म देता है, अतएव अहिंसक सामाजिक संरचना केंद्रीकरण विरोधी है।
(c) वे भारत में मशीनीकरण के पक्षधर नहीं थे।
(d) वे यू.एस.ए. में मशीनीकरण के पक्षधर नहीं थे।

60. गांधी की सत्याग्रह रणनीति में निम्नलिखित में से किसे सबसे अंतिम स्थान प्राप्त है?
UPPCS (Lower) Mains 2013
(a) बहिष्कार (b) धरना
(c) उपवास (d) हड़ताल

61. गांधीजी ने राजनीति का जो प्रतिमान प्रस्तुत किया है, निम्न में से कौन-सी विशेषता उसमें नहीं है?
UPPCS (Lower) Mains 2013
(a) नैतिकता (b) धर्म
(c) मानवता (d) सत्ता

62. गांधीवादी विचारधारा किनसे प्रभावित रही है?
UPPCS (Lower) Mains 2013
(a) रास्किन से
(b) थोरो से
(c) टॉल्सटॉय से
(d) उपर्युक्त सभी से

63. महात्मा गांधी के अनुसार राजनीति का तात्पर्य था–
UPPCS (Lower) Mains 2013
(a) धर्मविहीन राजनीति
(b) जनकल्याण के लिये सक्रियता
(c) सत्यविहीन राजनीति
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

64. गांधीजी के सिद्धांत के अनुसार निम्न में से कौन-सा एक कथन सही नहीं है?
UPPCS (Lower) Mains 2013
(a) सत्याग्रही का उद्देश्य शत्रु को पराजित करना है।
(b) सत्याग्रही का शस्त्र अहिंसा है।
(c) सत्याग्रही को अपने संकल्प में दृढ़ विश्वास होना चाहिये।
(d) सत्याग्रही को विरोधियों के प्रति द्वेष भाव नहीं रखना चाहिये।

65. 'स्प्रींगिंग टाइगर' पुस्तक जीवनी है–
UP (RO/ARO) Pre 2013
(a) भगत सिंह की (b) सुभाष चंद्र बोस की
(c) चंद्रशेखर आज़ाद की (d) रामप्रसाद बिस्मिल की

66. प्रथम अखिल भारतीय समाजवादी युवा कॉन्ग्रेस का सभापति कौन था? **UP (RO/ARO) Pre 2013**
(a) सुभाष चंद्र बोस (b) आचार्य नरेंद्र देव
(c) जवाहरलाल नेहरू (d) जे.बी.कृपलानी

67. भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस का एकमात्र अधिवेशन जिसकी अध्यक्षता महात्मा गांधी ने की थी:
UP (RO/ARO) Pre 2013
(a) इलाहाबाद अधिवेशन-1921
(b) गया अधिवेशन - 1922
(c) बेलगाँव अधिवेशन-1924
(d) कराची अधिवेशन-1930

68. निम्न आंदोलनों का सही कालक्रम क्या था?
UPPCS (Mains) 2012
I. सविनय अवज्ञा आंदोलन
II. खिलाफत आंदोलन
III. होमरूल आंदोलन
IV. भारत छोड़ो आंदोलन
अपना उत्तर नीचे दिये कूट से चुनिये:
(a) I, IV, III, II (b) IV, I, II, III
(c) III, II, I, IV (d) II, IV, I, III

69. भारतीय इतिहास में तिथि 6 अप्रैल, 1930 जानी जाती है– **UPPCS (Mains) 2012**
(a) लंदन में प्रथम गोलमेज़ सम्मेलन के लिये
(b) असहयोग आंदोलन के लिये
(c) गांधी-इर्विन समझौते के लिये
(d) नमक सत्याग्रह के दौरान महात्मा गांधी द्वारा नमक बनाकर कानून तोड़ना

70. नमक सत्याग्रह में गांधीजी के गिरफ्तार हो जाने पर आंदोलन के नायक के रूप में उनका स्थान किसने ग्रहण किया? **UPPCS (Mains) 2012**
(a) अब्बास तैयब जी (b) अबुल कलाम आज़ाद
(c) जवाहरलाल नेहरू (d) सरदार पटेल

71. भारत छोड़ो आंदोलन के संदर्भ में महात्मा गांधी को कहाँ बंदी बनाया गया? **UPPCS (Mains) 2012**
(a) बम्बई में (b) मद्रास में
(c) कलकत्ता में (d) नई दिल्ली में

72. 1927 की बटलर कमेटी का उद्देश्य था–
(a) केंद्रीय एवं प्रांतीय सरकारों की अधिकारिता निश्चय करना।
(b) भारत के सेक्रेटरी ऑफ स्टेट की शक्तियाँ निश्चित करना।
(c) राष्ट्रवादी प्रेस पर सेंसर व्यवस्था अधिरोपित करना।
(d) भारत सरकार एवं देशी रियासतों के बीच संबंध सुधारना।

73. भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के संबंध में, निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिये:
1. रॉयल इंडियन नेवी में गदर
2. भारत छोड़ो आंदोलन के प्रारंभ
3. द्वितीय गोलमेज सम्मेलन
उपर्युक्त घटनाओं का सही कालानुक्रम क्या है?
(a) 1-2-3 (b) 2-1-3
(c) 3-2-1 (d) 3-1-2

74. सर स्टैफर्ड क्रिप्स की योजना में यह परिकल्पना थी कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद:
(a) भारत को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की जानी चाहिये
(b) स्वतंत्रता प्रदान करने से पहले भारत को दो भागों में विभाजित कर देना चाहिये
(c) भारत को इस शर्त के साथ गणतंत्र बना देना चाहिये कि वह राष्ट्रमंडल में शामिल होगा
(d) भारत को डोमिनियन स्टेटस दे देना चाहिये

75. इनमें से किसने अप्रैल 1930 ई. में नमक कानून तोड़ने के लिये तंजौर तट पर एक अभियान संगठित किया था?
(a) चिदम्बरम पिल्लै
(b) सी. राजगोपालाचारी
(c) के. कामराज
(d) एनी बेसेंट

76. साइमन कमीशन के आने के विरुद्ध भारतीय जन-आंदोलन क्यों हुआ?
(a) भारतीय 1919 ई. के अधिनियम की कार्यवाही का पुनरीक्षण कभी नहीं चाहते थे।
(b) साइमन कमीशन ने प्रांतों में द्विशासन की समाप्ति की संस्तुति की थी।
(c) साइमन कमीशन में कोई भी भारतीय सदस्य नहीं था।
(d) साइमन कमीशन ने देश के विभाजन का सुझाव दिया था।

77. भारत छोड़ो आंदोलन किसकी प्रतिक्रिया में प्रारम्भ किया गया?
(a) कैबिनेट मिशन योजना
(b) क्रिप्स प्रस्ताव
(c) साइमन कमीशन रिपोर्ट
(d) वेवेल योजना

78. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिये:

	सूची-I	सूची-II
A.	नागपुर झंडा सत्याग्रह	1. 1923
B.	वायकोम सत्याग्रह	2. 1924-25
C.	अकाली आंदोलन	3. 1922-27
D.	हिंदू महासभा का गठन	4. 1915

कूट:

	A	B	C	D
(a)	1	3	2	4
(b)	1	2	3	4
(c)	2	1	4	3
(d)	2	4	1	3

79. निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
1. हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का गठन चंद्रशेखर आज़ाद ने भगत सिंह के साथ मिलकर किया था।
2. काकोरी षड्यंत्र में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन ने बड़ी भूमिका निभाई थी।
3. शांति घोष तथा सुनीति चौधरी ने चटगाँव शस्त्रागार पर हमले में भागीदारी निभाई थी।
कूट:
(a) केवल 2 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

80. निम्नलिखित में से किसे सीमांत गांधी की संज्ञा दी जाती है?
    (a) खान अब्दुल गफ्फार खान
    (b) मौलाना अबुल कलाम आज़ाद
    (c) मौलाना मोहम्मद अली
    (d) हसन मोहानी

81. निम्नलिखित में से किसे 'दिल्ली चलो' आंदोलन के नाम से भी जाना जाता है?
    (a) व्यक्तिगत सत्याग्रह
    (b) भारत छोड़ो आंदोलन
    (c) सविनय अवज्ञा आंदोलन
    (d) असहयोग आंदोलन

82. भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जवाहरलाल नेहरू को कहाँ पर कैद कर रखा गया था?
    (a) आगा खाँ पैलेस
    (b) अहमदनगर दुर्ग
    (c) सेलुलर जेल
    (d) इनमें से कोई नहीं

83. जलियाँवाला बाग हत्याकांड की प्रतिक्रियास्वरूप निम्नलिखित में से किसने वायसराय की कार्यकारिणी परिषद से त्यागपत्र दे दिया था?
    (a) शंकरन नायर
    (b) रवींद्रनाथ टैगोर
    (c) विट्ठलभाई पटेल
    (d) मोतीलाल नेहरू

84. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
    1. खिलाफत आंदोलन का मुख्य उद्देश्य खलीफा के सम्मान, शक्ति और सर्वोच्चता की पुनर्स्थापना करना था।
    2. रौलेट एक्ट के प्रावधानों और जलियाँवाला बाग हत्याकांड ने असहयोग आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार कर दी थी।
    3. असहयोग आंदोलन के प्रावधानों में सरकारी शिक्षण संस्थानों का विरोध करना सम्मिलित था।

    उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
    (a) केवल 1 और 4 (b) केवल 2 और 3
    (c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

85. साइमन कमीशन का गठन किस वर्ष हुआ था?
    (a) 1928 (b) 1927
    (c) 1929 (d) 1930

86. गांधीजी की 11 सूत्री मांग की पूर्ति न होने पर निम्नलिखित में से कौन-सा आंदोलन आरंभ हुआ?
    (a) असहयोग आंदोलन
    (b) नील सत्याग्रह
    (c) खेड़ा सत्याग्रह
    (d) सविनय अवज्ञा आंदोलन

87. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
    (a) प्रथम गोलमेज सम्मेलन में कॉन्ग्रेस के किसी प्रतिनिधि ने भाग नहीं लिया था।
    (b) गांधी-इर्विन समझौते का स्वागत देश के सभी बड़े नेताओं ने किया था।
    (c) सांप्रदायिक पंचाट के तहत केवल मुसलमानों और यूरोपीय लोगों के लिये पृथक् निर्वाचक मंडल का प्रावधान किया गया था।
    (d) ज्योतिबा फुले ने हरिजन सेवक संघ की स्थापना की थी।

88. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही कालक्रमानुसार व्यवस्थित है?
    (a) सांप्रदायिक पंचाट, प्रथम गोलमेज सम्मेलन, पूना पैक्ट, द्वितीय गोलमेज सम्मेलन
    (b) प्रथम गोलमेज सम्मेलन, सांप्रदायिक पंचाट, द्वितीय गोलमेज सम्मेलन, पूना पैक्ट
    (c) प्रथम गोलमेज सम्मेलन, द्वितीय गोलमेज सम्मेलन, सांप्रदायिक पंचाट, पूना पैक्ट
    (d) द्वितीय गोलमेज सम्मेलन, तृतीय गोलमेज सम्मेलन, सांप्रदायिक पंचाट, पूना पैक्ट

89. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
    1. चितरंजन दास, मोहम्मद अली जिन्ना आदि ने असहयोग प्रस्ताव का विरोध किया था।
    2. अली बंधुओं ने असहयोग प्रस्ताव को स्वीकार किया था।

    उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
    (a) केवल 1 (b) केवल 2
    (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

90. नेशनल लिबरल लीग का गठन निम्नलिखित में से किन नेताओं ने किया था?
   1. तेज़ बहादुर सप्रू
   2. विपिनचंद्र पाल
   3. श्रीनिवास शास्त्री
   4. गोपाल कृष्ण गोखले

   कूट:
   (a) केवल 1, 2 और 4
   (b) केवल 1, 2 और 3
   (c) केवल 3 और 4
   (d) 1, 2, 3 और 4

91. वर्ष 1932 में महात्मा गांधी ने निम्नलिखित में से किस कारण आमरण अनशन आरंभ कर दिया था?
   (a) दलितों को आरक्षण मिल जाने के कारण।
   (b) दलितों के लिये पृथक् निर्वाचक मंडल की व्यवस्था स्थापित किये जाने के कारण।
   (c) नेहरू रिपोर्ट की सिफारिशों के प्रभावी न होने के कारण।
   (d) इनमें से कोई नहीं।

92. प्रजामंडल आंदोलन निम्नलिखित में से किससे सम्बद्ध था?
   (a) देशी रियासतों में संघर्ष
   (b) जनजातीय सुधार
   (c) वयस्क मताधिकार
   (d) शिक्षा में सुधार

93. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   1. 'वर्धा प्रस्ताव' भारत छोड़ो आंदोलन से सम्बद्ध था।
   2. क्रिप्स मिशन तथा कैबिनेट मिशन की असफलता ने भारत छोड़ो आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार कर दी थी।

   उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1 और न ही 2

94. वेवेल योजना के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-से कथन सही हैं?
   1. इस योजना के अनुसार वायसराय की कार्यकारिणी परिषद में हिंदुओं और मुसलमानों की संख्या बराबर होनी थी।
   2. इसमें प्रावधान था कि प्रतिरक्षा को छोड़कर समस्त विभाग भारतीयों के अधिकार में रहेगा।
   3. वायसराय तथा कमाण्डर इन चीफ के अतिरिक्त शेष सभी सदस्य भारतीय होने थे।

   कूट:
   (a) केवल 1 और 2
   (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 1 और 3
   (d) 1, 2 और 3

उत्तरमाला

1. (d)	2. (a)	3. (b)	4. (b)	5. (d)	6. (b)	7. (a)	8. (d)	9. (b)	10. (d)
11. (a)	12. (c)	13. (a)	14. (b)	15. (d)	16. (b)	17. (c)	18. (a)	19. (b)	20. (b)
21. (d)	22. (c)	23. (c)	24. (a)	25. (b)	26. (a)	27. (d)	28. (a)	29. (a)	30. (b)
31. (d)	32. (a)	33. (d)	34. (d)	35. (b)	36. (a)	37. (d)	38. (c)	39. (c)	40. (b)
41. (a)	42. (b)	43. (b)	44. (a)	45. (c)	46. (c)	47. (b)	48. (a)	49. (a)	50. (b)
51. (b)	52. (d)	53. (c)	54. (b)	55. (d)	56. (b)	57. (d)	58. (a)	59. (d)	60. (d)
61. (d)	62. (d)	63. (b)	64. (a)	65. (b)	66. (c)	67. (c)	68. (c)	69. (d)	70. (a)
71. (a)	72. (d)	73. (c)	74. (d)	75. (b)	76. (c)	77. (b)	78. (b)	79. (a)	80. (a)
81. (a)	82. (b)	83. (a)	84. (d)	85. (b)	86. (d)	87. (a)	88. (c)	89. (c)	90. (b)
91. (b)	92. (a)	93. (a)	94. (d)						

अभ्यास प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. क्या आप असहयोग आंदोलन के स्थगन को एक "राष्ट्रीय विपत्ति" मानते हैं?
2. 1930 तथा 1940 के दशकों में विभाजन की राजनीति में विभिन्न घुमावों तथा मरोड़ों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिये।
3. विवेचना कीजिये कि गांधी के सत्याग्रहों ने किस प्रकार भारतीयों के बीच भय के दौर को समाप्त किया था तथा इस प्रकार साम्राज्यवाद के एक महत्त्वपूर्ण खंबे को उखाड़ फेंका था।
4. "भारत छोड़ो आंदोलन को 'स्वतःस्फूर्त' क्रांति के रूप में चित्रित करना आंशिक व्याख्या होगी, इसी प्रकार उसे गांधीवादी सत्याग्रह आंदोलनों के चरम बिंदु के रूप में देखना थी।" स्पष्ट कीजिये।
5. "एम. के. गांधी द्वारा खिलाफत आंदोलन का समर्थन एक बड़ी भूल थी, क्योंकि यह एक ऐसा अन्य देशीय मुद्दा था जिसने भारतीय राष्ट्रीयता को जड़ों से ही काट दिया था।" कथन का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिये।
6. "गांधी ने जनांदोलनों पर अंकुश लगाया, फिर भी जनता में अपनी लोकप्रियता बनाए रखी।" टिप्पणी कीजिये।
7. सविनय अवज्ञा आंदोलन के स्वरूप एवं महत्त्व का मूल्यांकन करें।
8. "अरुणा आसफ अली की 1942 के जनांदोलनों में सक्रिय सहभागिता, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका का प्रतीकीकरण था।" इस कथन का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिये।
9. 'क्रिप्स मिशन' के प्रस्तावों पर संक्षिप्त चर्चा करते हुए क्रिप्स मिशन की असफलता के कारणों का उल्लेख कीजिये।
10. "रॉयल भारतीय नौसेना के विद्रोह की घटना को अंततः भारतीय स्वतंत्रता दिवस की तरह ही ब्रिटिश शासन की समाप्ति के रूप में चिह्नित किया गया।" व्याख्या कीजिये।
11. "कैबिनेट मिशन योजना को नकारने की बजाय, कॉन्ग्रेस ने अधकचड़ी विधिक युक्ति का सहारा अपने हितों के दूरगामी प्रबंधों को साधने के लिये, इसके सीमित प्रावधानों को स्वीकार कर लिया।" समालोचनात्मक समीक्षा कीजिये।
12. आज़ाद हिंद फौज मुकदमा ने भारतीय जनता के दिल से ब्रिटिश साम्राज्यवाद का डर निकाल दिया। विश्लेषण कीजिये।
13. स्वतंत्रता संग्राम में, विशेष तौर पर गांधीवादी चरण के दौरान महिलाओं की भूमिका का विवेचन कीजिये।
14. महात्मा गांधी के बिना भारत की स्वतंत्रता की उपलब्धि कितनी भिन्न हुई होती? चर्चा कीजिये।
15. वर्तमान समय में महात्मा गांधी के विचारों के महत्त्व पर प्रकाश डालिये।

अध्याय 10

भारत में संवैधानिक विकास (Constitutional Development in India)

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भारत के संवैधानिक विकास की यात्रा सन् 1599 से आरंभ होती है, जब महारानी एलिजाबेथ ने ईस्ट इंडिया कंपनी को एक राजलेख द्वारा पंद्रह वर्षों के लिये व्यापार का अधिकार प्रदान किया, जिसे '1599 ई. का चार्टर' कहा जाता है। इस चार्टर के माध्यम से कंपनी को पूर्वी देशों में व्यापार का अधिकार सौंपा गया तथा कंपनी की समस्त शक्तियाँ 24 सदस्यीय परिषद में निहित कर दी गईं। '1726 ई. के चार्टर' से कलकत्ता, बंबई तथा मद्रास प्रेसिडेंसी के गवर्नरों को विधि-निर्माण की शक्ति सौंपी गई।

रेग्युलेटिंग एक्ट, 1773 *(Regulating Act, 1773)*

भारत के संवैधानिक इतिहास में सन् 1773 का रेग्युलेटिंग एक्ट विशेष महत्त्व रखता है। यह अधिनियम भारत में कंपनी के प्रशासन पर ब्रिटिश संसदीय नियंत्रणों के प्रयासों की शुरुआत थी। परिणामत: अब कंपनी के शासनाधीन क्षेत्रों का प्रशासन कंपनी के व्यापारियों का निजी मामला नहीं रहा। इस एक्ट में भारत में कंपनी के शासन के लिये पहली बार लिखित संविधान प्रस्तुत किया गया। इस एक्ट में उल्लिखित प्रावधान निम्नवत् थे-

- इस एक्ट के द्वारा कलकत्ता में एक सुप्रीम कोर्ट की स्थापना की गई। इसमें एक मुख्य न्यायाधीश तथा तीन अवर न्यायाधीश होते थे। सर एलिजाह इम्पे मुख्य न्यायाधीश तथा चेम्बर्स, लिमेस्टर एवं हाइड अन्य न्यायाधीश नियुक्त किये गए। सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के विरुद्ध अपील लंदन स्थित प्रिवी काउन्सिल में की जा सकती थी। इस सर्वोच्च न्यायालय को प्राथमिक तथा पुनर्विचार संबंधी अधिकार दिये गए। यह न्यायालय सन् 1774 में गठित किया गया।
- इस अधिनियम के द्वारा बंगाल के गवर्नर को 'बंगाल का गवर्नर जनरल' पद नाम दे दिया गया। साथ ही, उसे कुछ विशेष मामलों में मद्रास तथा बंबई की प्रेसिडेंसियों का अधीक्षण भी करना था। बंगाल में एक प्रशासक मंडल बनाया गया, जिसमें गवर्नर जनरल (अध्यक्ष) तथा चार सदस्य जिन्हें पार्षद कहा जाता था, को नियुक्त किया गया। इस प्रशासक मंडल में निर्णय बहुमत से होते थे। केवल मत बराबर होने की स्थिति में ही गवर्नर जनरल निर्णायक मत का प्रयोग कर सकता था।
- प्रशासक मंडल के सदस्यों का निर्वाचन पाँच वर्षों के लिये किया जाता था तथा वे कंपनी के निदेशक मंडल (Board of Directors) की सिफारिश पर ब्रिटिश क्राउन द्वारा ही हटाए जा सकते थे।
- इस अधिनियम के अनुसार कर्मचारी किसी भी प्रकार का उपहार, दान या पारितोषिक ग्रहण नहीं कर सकते थे।

इस प्रकार, रेग्युलेटिंग एक्ट के माध्यम से एक ईमानदार शासन का आधारभूत सिद्धान्त निर्धारित किया गया तथा इस नियामक अधिनियम के द्वारा ब्रिटिश भारत के लिये एक लिखित संविधान प्रणाली का सूत्रपात हुआ। वास्तव में, इस अधिनियम के माध्यम से एक व्यक्ति अथवा कुछ व्यक्तियों के स्थान पर एक संस्था के शासन की स्थापना हो गई।

पिट्स इंडिया एक्ट, 1784 *(Pitt's India Act, 1784)*

कंपनी पर अपने प्रभाव को मज़बूत करने के उद्देश्य से ब्रिटिश पार्लियामेंट ने सन् 1784 में पिट्स इंडिया एक्ट पारित किया। इसके माध्यम से छ: सदस्यीय नियंत्रण बोर्ड (Board of Control) की व्यवस्था की गई। इस नियंत्रण बोर्ड को भारतीय प्रशासन के संबंध में निरीक्षण, निर्देशन तथा नियंत्रण संबंधी व्यापक अधिकार दिये गए, हालाँकि कंपनी के व्यापार को अछूता छोड़ दिया गया। इस एक्ट के प्रमुख प्रावधान इस प्रकार थे-

- भारत का प्रशासन गवर्नर जनरल व उसकी तीन-सदस्यीय परिषद के हाथ में रहेगा। परिषद सहित गवर्नर जनरल को इस बात का अधिकार होगा कि वह अन्य प्रेसिडेन्सियों के कार्यों का निरीक्षण, नियंत्रण तथा निर्देशन कर सके। गवर्नर जनरल को अभी भी बहुमत के आधार पर कार्य करना होता था। पिट्स अधिनियम के द्वारा प्रांतीय गवर्नरों की कार्यकारिणी के

अध्याय 11

भारत के गवर्नर जनरल तथा वायसराय (Governor General and Viceroy of India)

11.1 बंगाल के गवर्नर *(Governor of Bengal)*

रॉबर्ट क्लाइव *(1757-60 और 1765-67)*

- 1757 का प्लासी का युद्ध
- बंगाल के समस्त क्षेत्र के लिये उप-दीवान नियुक्त किये गए: बंगाल के लिये मुहम्मद रज़ा खाँ, बिहार के लिये राजा शिताबराय तथा उड़ीसा के लिये राय दुर्लभ की नियुक्ति की।
- बंगाल में द्वैध शासन का जनक, श्वेत विद्रोह
- 1765 में इलाहाबाद की संधियाँ (अवध के नवाब शुजाउद्दौला एवं मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय के साथ)
- सलाबत जंग तथा आलमगीर-II द्वारा 'उमरा' की उपाधि दी गई।
- क्लाइव ने सेना के तीन केंद्रों की स्थापना की- इलाहाबाद, मुंगेर व बांकीपुर (पश्चिम बंगाल)
- क्लाइव के पश्चात् कुछ समय तक हॉलवैल बंगाल का गवर्नर रहा।

वेन्सिटार्ट *(1760-64)*

- बक्सर का युद्ध (1764)
- 1767–69 तक वेरेल्स्ट ने बंगाल के गवर्नर का पदभार सँभाला।

कर्टियर *(1769-72)*

- बंगाल में अकाल (1770)

वारेन हेस्टिंग्स *(1772-74)*

- बंगाल का अंतिम गवर्नर, बंगाल में द्वैध शासन को समाप्त किया।
- 1772 में प्रत्येक ज़िले में एक फौजदारी तथा दीवानी अदालतों की स्थापना।

11.2 बंगाल के गवर्नर जनरल *(Governor General of Bengal)*

वारेन हेस्टिंग्स *(1774-85)*

- रेग्युलेटिंग एक्ट (1773) के तहत वारेन हेस्टिंग्स को बंगाल का प्रथम गवर्नर जनरल बनाया गया।
- 1781 का अधिनियम- इसके तहत गवर्नर जनरल तथा उसकी काउंसिल एवं कलकत्ता उच्च न्यायालय के मध्य शक्तियों का कार्यक्षेत्र स्पष्ट रूप से विभाजित कर दिया गया।
- नंद कुमार पर अभियोग लगाकर फाँसी; इस मुकदमें को 'न्यायिक हत्या' की संज्ञा दी जाती है।
- 1781 में मुस्लिम शिक्षा सुधार के लिये कलकत्ता में प्रथम मदरसा स्थापित।
- 1775–82 का प्रथम मराठा युद्ध तथा 1782 में सालबाई की संधि।
- 1780–84 का द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध व मंगलौर की संधि।

अध्याय 12

आज़ादी के बाद का प्रारंभिक दौर (Initial Phase After Independence)

15 अगस्त, 1947 को भारत को आज़ादी मिली। स्वतंत्रता दिवस का औपचारिक समारोह एक राष्ट्र के पुनर्निर्माण के संकल्प के साथ शुरू हुआ। इसमें चौधरी खलिकुज़्ज़मा ने जहाँ हिंदू-मुस्लिम एकता की बात कही, वहीं सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने पूर्व-पश्चिम संश्लेषण के आधार पर राष्ट्र निर्माण की बात कही। फिर आज़ाद देश के भावी प्रधानमंत्री नेहरू ने संविधान सभा तथा राष्ट्र को संबोधित करते हुए 'ट्रिस्ट विद डेस्टिनी' (Tryst with destiny) नामक अपने अविस्मरणीय भाषण में भारतीय जनता की भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा- "मध्य रात्रि की इस बेला में जब पूरी दुनिया नींद के आगोश में सो रही है, हिंदुस्तान एक नई ज़िंदगी और आज़ादी के वातावरण में अपनी आँखें खोल रहा है। यह एक ऐसा क्षण है, जो इतिहास में बहुत ही कम प्रकट होता है, जब हम पुराने युग से एक नए युग में प्रवेश करते हैं, जब एक युग खत्म होता है और जब एक देश की बहुत दिनों से रखी हुई आत्मा अचानक अपनी अभिव्यक्ति पा लेती है।"

जब स्वतंत्र भारत ने अपने नव-निर्माण का कार्य प्रारंभ किया तो उसके पास सिर्फ समस्याएँ ही नहीं, कई अनमोल रत्न भी थे। उनमें सबसे बड़ी संपदा थी- उच्च क्षमता व आदर्श वाले समर्पित महान नेताओं की एक लंबी कतार। नेहरू के साथ नेताओं का एक विशाल समूह खड़ा था, जिन्होंने स्वतंत्रता की लड़ाई में यादगार भूमिका निभाई थी। सरदार पटेल दृढ़ इच्छाशक्ति के स्वामी तथा प्रशासनिक कार्यों में निपुण थे। इसके अलावा विद्वान अबुल कलाम आज़ाद, विद्वता तथा पांडित्य से भरपूर राजेंद्र प्रसाद और तीक्ष्ण बुद्धि संपन्न सी. राजगोपालाचारी तथा राज्य स्तर पर भी कई महत्त्वपूर्ण नेता थे- जैसे यू. पी. में गोविंद वल्लभ पंत, पश्चिम बंगाल में बी.सी. राय, बंबई में बी.जी. खेर तथा मोरारजी देसाई। ये सभी अपने-अपने प्रदेशों के निर्विवाद, प्रख्यात राजनीतिक शक्ति तथा जन नेता की छवि वाले लोग थे। इन सभी नेताओं को आधुनिक तथा लोकवादी प्रशासन चलाने के लिये पर्याप्त कुशलता प्राप्त थी।

आज़ाद भारत का प्रथम मंत्रिमंडल न केवल एक समावेशी भारत का प्रतिनिधित्व करता था, बल्कि यह असहमतियों के प्रति परस्पर सहमति के जज़्बे का भी द्योतक था। यह भारत में शुरुआती स्तर से ही लोकतंत्र की मज़बूती की कहानी प्रस्तुत करता रहा है। इस मंत्रिमंडल में दो लोगों का संबंध उद्योग जगत से था तो एक व्यक्ति सिख समुदाय का प्रतिनिधित्व करता था। स्वतंत्र भारत का पहला मंत्रिमंडल उस काल के संदर्भ में राजनीतिक चरित्र का नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चरित्र का था। इसमें पूरे देश का प्रतिनिधित्व था। इसमें शामिल होने वाले मंत्री पाँच अलग-अलग धर्मों से संबंध रखने वाले लोग थे। देश के सभी हिस्सों की भागीदारी थी, इसमें एक महिला (स्वास्थ्य मंत्री) राजकुमारी अमृत कौर भी थीं तथा दो पिछड़े माने जाने वाले समुदाय के नेता भी शामिल थे।

12.1 देशी रियासतों का एकीकरण *(Integration of Princely States)*

देसी रियासतों की संख्या कितनी थी, इस बात पर भी विवाद था, लेकिन इतनी तो पक्की बात है कि रियासतों की कुल संख्या 500 से अधिक थी तथा इनके आकार, हैसियत एवं रियासती संरचना भी अलग-अलग प्रकार की थी। जहाँ एक तरफ कश्मीर व हैदराबाद जैसी बड़ी देसी रियासतें थीं, जो किसी यूरोपियन देश के बराबर थीं तो वहीं दूसरी तरफ इतनी छोटी रियासतें भी थीं, जिनके तहत दर्जन अथवा दो दर्जन गाँव आते थे।

देसी रियासतें भारतीय इतिहास की लंबी राजनीतिक प्रक्रियाओं और ब्रिटिश नीतियों का परिणाम थीं। ये रजवाड़े अपनी ताकत और अपने स्वरूप के लिये पूरी तरह से अंग्रेज़ों पर निर्भर थे। भारत में कंपनी का शासन स्थापित होने के बाद देसी राज्यों को एक संधि करने पर मजबूर किया गया, जिसके तहत ब्रिटेन को 'सर्वोच्च शक्ति' के रूप में स्वीकार किया गया। इस संधि के माध्यम से ब्रिटिश राज्य ने मंत्रियों और उत्तराधिकारियों की नियुक्ति का अधिकार अपने हाथ में रखा था तथा उन्हें सैनिक सहायता उपलब्ध कराने का भी आश्वासन दे रखा था।

अध्याय 13

राष्ट्र के गठन में विविध समस्याएँ (Various Problems in the Formation of the Nation)

स्वतंत्रता के बाद से ही देश को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। उनमें राष्ट्रीय एकता को बनाकर रखना तथा राष्ट्र को मज़बूती प्रदान करना प्रमुख चुनौतियाँ थीं। भारतीय राष्ट्र का बनना अचानक घटित होने वाली घटना न होकर एक ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम थी। भारतीय सभ्यता में विविधता के लक्षण को हम प्राचीन काल से ही देख सकते हैं। जैसा कि कविवर रवींद्रनाथ टैगोर ने भी माना है कि "भारत की एकता भावनाओं की एकता है।" मुगलों के शासन के दौरान ही भारतीयों में राजनीतिक, प्रशासनिक व आर्थिक एकीकरण के तत्त्व पूरी तरह से विकसित हो गए थे। उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया ने भारत के एकीकरण की प्रक्रिया को और सुदृढ़ बना दिया।

स्वतंत्रता के दौरान होने वाले राष्ट्रीय आंदोलन ने भारतीयों को राजनीतिक व भावनात्मक रूप से जोड़कर उन्हें एक राष्ट्र का स्वरूप दे दिया लेकिन अभी भी भारत पूरी तरह से राष्ट्र नहीं कहा जा सकता था, बल्कि यह राष्ट्र बनने की प्रक्रिया में था। भारतीय राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया दीर्घकालीन व सतत् रूप से चलने वाली प्रक्रिया थी। राष्ट्रीय आंदोलन के नेतागण, जो विभिन्न क्षेत्र, भाषा व धर्म से संबद्ध थे, भी जब इस नए गणतंत्र की बुनियाद रख रहे थे तो उन्होंने भारत के एकीकरण और राष्ट्रीय एकता की प्रक्रिया को न सिर्फ बनाए रखना चाहा बल्कि उसे भविष्य में और ज़्यादा विकसित करने के बारे में सोचा। राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं के वक्तव्यों से यह बात पूरी तरह स्पष्ट होती है कि "भारत की एकता का पालन-पोषण मेरा पेशा है।" वस्तुत: भारत दुनिया का सबसे अधिक व जटिल सांस्कृतिक विभिन्नताओं वाला देश है। भिन्न-भिन्न भाषायी समूह, विभिन्न सांस्कृतिक और भौगोलिक-आर्थिक क्षेत्र, कई धर्मों व पंथों के लोगों का साथ में निवास करना भारत-भूमि की विशिष्टता को दर्शाता है। तमाम तरह की विविधताओं के उपस्थित होने के बाद भी इसकी विविधता, इसकी एकता के मार्ग में कभी बाधा नहीं बनी। अत: राष्ट्र निर्माताओं ने भी इस राष्ट्र का निर्माण वृहद् आधार पर करना ही उचित समझा।

राष्ट्र निर्माताओं ने भारत की विविधता को एक समस्या के रूप में न देखते हुए बल्कि सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ इसे एक शक्ति का स्रोत माना। इस प्रकार स्वतंत्र भारत का निर्माण 'विविधता में एकता' की अवधारणा के साथ हुआ। यहाँ विखंडनकारी प्रवृत्तियाँ भी पर्याप्त रूप में विद्यमान थीं। स्वतंत्रता के बाद भारतीय राष्ट्र का निर्माण एक वृहद् रणनीति के तहत किया गया था। इसमें क्षेत्रीय समानता, राजनीतिक व संस्थागत संसाधनों का कुशल संचालन, सर्वानुकूल सामाजिक ढाँचे का विकास, सामाजिक न्याय को प्रोत्साहित करने वाली नीतियाँ, समस्त प्रकार की असमानताओं का उन्मूलन और समाज के हर वर्ग को समान अवसर उपलब्ध कराना शामिल था। भारतीय संविधान का मौलिक ढाँचा भी इस प्रकार का था कि विघटनकारी प्रवृत्तियों का दमन किया जा सके। भारतीय संसद ने भी इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। भारतीय संसद एक ऐसा मंच था जहाँ सभी तरह की राजनीतिक शक्तियाँ अपने विचार देश के सम्मुख रख सकें।

आज़ादी के बाद नियोजित आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिये सरकार द्वारा गठित योजना आयोग का स्वरूप भी अखिल भारतीय स्तर का था। आयोग ने क्षेत्रीय आर्थिक विषमताओं को दूर करने में तथा राज्यों के बीच आर्थिक संसाधनों का वितरण भी बड़े ही निष्पक्ष ढंग से किया था। भारतीय संविधान में भी समस्त नागरिकों को धर्म, जाति व लिंग आधारित भेदभाव को समाप्त कर, समाज के हर वर्ग को पूरी समानता देने की बात कही गई। आरक्षण तथा सकारात्मक भेदभाव के माध्यम से भारतीय संविधान ने वंचित वर्गों के हितों को पुष्ट करने का प्रयास किया। सामाजिक न्याय व समरसता को बढ़ावा देने के लिये ज़मींदारी प्रथा को पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया। समस्त प्रकार की सामाजिक बुराइयाँ, यथा- बेगार, बंधुआ मज़दूरी आदि को पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया ताकि राष्ट्रीय अस्मिता के निर्माण में किसी प्रकार का अवरोध उत्पन्न न हो।

इस प्रकार भारतीय राष्ट्रीय एकता को मज़बूती प्रदान करने का काम किया गया। लेकिन विखंडनकारी तत्त्व भी पर्याप्त मात्रा में मौजूद थे। इन तत्त्वों ने बहुत जल्दी ही सिर उठाना शुरू कर दिया था तथा राष्ट्रीय एकता तार-तार होने लगी थी। स्वतंत्रता के बाद के आरंभिक वर्षों में सबसे बड़ा विभाजनकारी मुद्दा भाषा की समस्या थी। इस समस्या की वजह से देश की राजनीतिक व सांस्कृतिक एकता खतरे में पड़ती हुई दिखाई दे रही थी। भाषायी समस्या राष्ट्र के शैक्षणिक व आर्थिक विकास, रोज़गार व अन्य आर्थिक अवसर तथा राजनीतिक सत्ता तक पहुँच बनाने जैसे तरह-तरह के सवालों से भी जुड़ा मुद्दा था।

अध्याय 14

विदेश नीति का नेहरू युग (Nehru Era of Foreign Policy)

भारत की विदेश नीति के मूलभूत तत्त्व राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान ही निर्मित होने शुरू हो गए थे, जब राष्ट्रीय नेतृत्व ने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर अपनी विचारधारा के अनुसार नीतियाँ बनानी शुरू कर दी थीं। एक राष्ट्र के रूप में स्वतंत्र विदेश नीति पर चलने का प्रयत्न आज़ादी के बाद की भारतीय राजनीति की विशेषता थी। भारतीय विदेश नीति लंबे इतिहास और तात्कालिक घटनाओं की परिणति थी। विश्व परिस्थितियों में क्रांतिकारी परिवर्तनों के बावजूद आज़ादी के संघर्ष और आज़ादी के आरंभिक वर्षों में विकसित विशेषताओं की निरंतरता बाद के वर्षों में भी बनी रही। भारतीय विदेश नीति के मुख्य शिल्पकार पंडित जवाहरलाल नेहरू थे। स्वतंत्रता के बाद से मृत्युपर्यंत तक भारतीय विदेश नीति इनके वृहद् मानवतावादी व्यक्तित्व तथा सिद्धांतों के आस-पास ही घूमती रही। अपनी विदेश नीति के तहत भारत सिर्फ निष्पक्ष या सैनिक गुटों से दूर ही नहीं रहा बल्कि इसने अपनी आवश्यकतानुसार तत्कालीन महाशक्तियों का उपयोग भी देशहित में किया। भारतीय विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता के सिद्धांत का अर्थ था—हर मुद्दे पर आज़ादी से रुख अपनाना, सही या गलत की स्वयं पहचान करना।

14.1 भारत की विदेश नीति और पंचशील समझौता *(India's Foreign Policy and Panchsheel Agreement)*

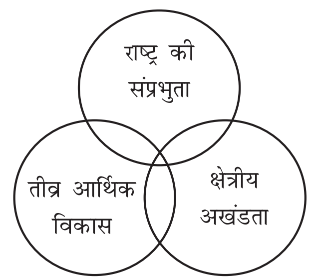

प्रारंभिक विदेश नीति

भारत सन् 1947 में स्वाधीन हुआ और इसके सामने दुनिया में अपनी छवि विकसित करने और उस काल की अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति से सामंजस्य स्थापित करने जैसी चुनौतियाँ थीं। भारत की विदेश नीति पर स्वाधीन भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की गहरी छाप थी। उन्होंने इसको पाला-पोसा था, जीवन और शक्ति प्रदान की थी और अनेकानेक उपायों से इसे आकार दिया था, लेकिन उन्होंने इसे गढ़ा नहीं था। नेहरू ने खुद ही स्वीकार किया था कि भारत की विदेश नीति की जड़ें भारत की सभ्यता और परंपराओं में, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में, इसकी भौगोलिक स्थिति में और शांति-सुरक्षा, विकास तथा इस जगत् में एक स्थान के लिये भारत की तलाश में स्थित थी। उन्हीं के शब्दों में, "हमारी नीति को 'नेहरू नीति' कहना बिल्कुल गलत है...इसे मैंने जन्म नहीं दिया। यह नीति भारत की परिस्थिति में, भारत के अतीत की सोच में, भारत के संपूर्ण दृष्टिकोण में निहित है, यह निहित है भारतीय मानस के उस अनुकूलन में जो स्वाधीनता संग्राम के दौरान हुआ था और यह आज की दुनिया के हालात में निहित है।" नेहरू पर अक्सर यह आरोप लगाया जाता था कि विदेश नीति के मामले में वह आदर्शवादी और नैतिकतावादी है। दरअसल वह इनमें से कोई नहीं थे। अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारत के हितों या इसकी संप्रभुता का बलिदान किये बगैर उन्होंने देश को शीतयुद्ध के बारूदी सुरंगों भरे क्षेत्र के बीच चलाने में भारी यथार्थवाद को प्रदर्शित किया था। लोग उन हालातों, घरेलू तथा अंतर्राष्ट्रीय दोनों को भूल जाते हैं, जिनमें नेहरू ने भारत की विदेश नीति को स्वरूप दिया था।

सन् 1947 में जब स्वाधीनता प्राप्त हुई, भारत के पास नाममात्र की सैनिक और आर्थिक शक्ति थी। विभाजन सेना में भी हुआ था और इसका एक हिस्सा पाकिस्तान चला गया था। जहाँ तक अर्थव्यवस्था का संबंध है, इसके लिये आलोचनापूर्वक यह कहा जाता था कि भारत में तब एक पिन भी नहीं बनती थी। नेहरू का मानना था कि अपने मुट्ठी भर संसाधनों का इस्तेमाल प्राथमिकता के आधार पर आर्थिक विकास के लिये निवेश करने में करना चाहिये अथवा सैनिक तैयारियों के लिये करना चाहिये। जो सैनिक शक्ति मज़बूत आर्थिक नींव पर आधारित नहीं, वह स्थायी नहीं होगी, वह बालू पर बनाई गई नींव जितनी क्षणिक होगी। अनेक देशों के उदाहरण सामने थे, जैसे कि उस काल का पाकिस्तान और थाईलैंड, जिन्होंने मूलतया सैनिक शक्ति पर भरोसा किया था, जिसे उनकी अर्थव्यवस्था का समर्थन प्राप्त नहीं था। इन पर सदा अस्थिर शासकों का राज रहा और वे लगातार दूसरे देशों पर निर्भर रहे थे। नेहरू अत्यंत यथार्थवादी थे। वे जानते थे कि देश का स्थायित्व और

अध्याय 15

1947-64 के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था (Indian Economy During 1947–64)

आज़ादी के समय भारत की आर्थिक स्थिति दयनीय थी, उपनिवेशवाद ने अर्थव्यवस्था और समाज को बर्बाद कर दिया था तथा उसे शेष विश्व में हो रहे आधुनिक औद्योगिक परिवर्तनों से दूर रखा। घोर गरीबी, निरक्षरता, खेती और उद्योगों की बदहाली के अलावा उपनिवेशवाद द्वारा भारतीय अर्थतंत्र और समाज में लाई गई ढाँचागत विकृतियों ने आत्मनिर्भर विकास का काम अत्यंत कठिन बना दिया था। भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न हिस्सों के बीच प्रतिकूल संबंध और ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था पर उसकी अनिवार्य निर्भरता, भारतीय अर्थव्यवस्था की तत्कालीन ढाँचागत विकृति का ही उदाहरण है।

स्वतंत्र भारत के तीव्र औद्योगिक विकास के लिये इसी औपनिवेशिक विरासत को तोड़ना ज़रूरी था। प्रथम औद्योगिक क्रांति के दो सौ वर्षों बाद और कई अन्य देशों में औद्योगिक क्रांति के सौ वर्षों बाद भारत में आधुनिक औद्योगीकरण की स्थापना करना एक दुरूह कार्य था। उपनिवेशवाद द्वारा निर्मित इन समस्याओं के अलावा भारत के सामने पूरी तरह बदली हुई रणनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ थीं। यद्यपि उपनिवेशवाद से स्वतंत्र हुए कई अन्य देशों के मुकाबले भारत कई मामलों में अनुकूल स्थिति में था। 1914 और 1947 के बीच भारतीयों के स्वामित्व में और उनके द्वारा नियंत्रित एक छोटा किंतु स्वतंत्र औद्योगिक आधार देश में तैयार हो चुका था। दोनों विश्वयुद्धों एवं तीस के दशक की वैश्विक महामंदी के परिणामस्वरूप साम्राज्यवाद के कमजोर पड़े शिकंजे का फायदा उठाकर यह कार्य संभव हुआ। भारत की आज़ादी आते-आते भारतीय उद्यमी भारत में यूरोपीय उद्यम का सफलतापूर्वक मुकाबला कर पा रहे थे। इस प्रकार वे भारत के औद्योगिक उत्पादन के एक बड़े हिस्से पर अपना अधिकार कर सके। भारतीय पूंजीपतियों का वित्तीय क्षेत्र जैसे– बैंकिंग, जीवन बीमा इत्यादि पर भी प्रभुत्व स्थापित हो गया था।

अत: आज़ादी के वक्त तक उपनिवेशवादी इतिहास के बावजूद भारत में एक ऐसा स्वतंत्र आर्थिक आधार तैयार हो गया था जिसके आधार पर आगे बढ़ा जा सकता था तथा स्वतंत्र और तेज औद्योगीकरण की नीति अपनाई जा सकती थी।

ब्रिटिश भारत में उद्योग-धंधों का जो सीमित विकास हुआ भी वह ब्रिटेन के सहयोग से नहीं वरन् ब्रिटिश बाधाओं के बावजूद हुआ था। स्वतंत्रता से पूर्व ब्रिटिश औपनिवेशिक आर्थिक प्रभाव स्थान एवं समय के हिसाब से भिन्न था, अर्थात् पूरे भारतवर्ष में इनकी आर्थिक नीतियाँ सदैव बदलती रहीं तथा इन परिवर्तित आर्थिक नीतियों के कारण पड़ने वाले हानिकारक एवं लाभप्रद प्रभाव भी विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग रहे। ब्रिटिश आर्थिक नीतियों के कारण ही पश्चिमी भारत की तुलना में पूर्वी भारत को ज़्यादा नुकसान हुआ और इसके संयुक्त प्रभाव के रूप में स्वतंत्रता के समय गुजरात व महाराष्ट्र की आर्थिक स्थिति बिहार, बंगाल, उड़ीसा एवं पूर्वोत्तर के राज्यों से ज़्यादा बेहतर थी। पश्चिमी भारत में इस काल में कुछ उद्योगों की स्थापना भी इसका एक कारण था। 20वीं सदी के प्रारंभ से ही राष्ट्रीय आंदोलनों के प्रतिरोध एवं तमाम अंतर्राष्ट्रीय कारकों के प्रभाव से ब्रिटिश साम्राज्यवाद कमजोर पड़ने लगा था। इस दौर में ब्रिटिश शासक राजनीति के साथ-साथ कुछ आर्थिक रियायतें जैसे-इस्पात, चीनी, वस्त्र, कागज, सीमेंट आदि उद्योगों को शुष्क संरक्षण देने के लिये मजबूर हुए। इससे भारतीय उद्योग, जो अब तक चाय, कॉफी, जूट, तंबाकू, रबर, अभ्रक, मैगनीज जैसी निर्यात प्रधान वस्तुओं के उत्पादन तक ही सीमित था, का विस्तार संभव हुआ। फिर भी आधुनिक विनिर्माण उद्योग का जो विकास हुआ भी वह परंपरागत हस्तशिल्प उद्योगों के विनाश से होने वाले नुकसान के मुकाबले बहुत कम था। ब्रिटिश भारत में व्याप्त इन स्थितियों से उत्पन्न व्यापक दरिद्रता व लोगों में क्रय शक्ति की कमी ने भी एक ठोस घरेलू-बाज़ार के विकास को बाधित किया। हालाँकि ब्रिटिश भारत में विकसित उद्योगों एवं तत्पश्चात् राज्य की सकारात्मक भूमिका के कारण भारत अपने-आपको नव-उपनिवेशवाद के चंगुल से बचा पाया।

15.1 आर्थिक विकास के प्रारंभिक विचार (स्वतंत्रता पूर्व एवं पश्चात्) *[Initial Thoughts of Economic Development (Pre and Post Independence)]*

महात्मा गांधी अक्सर कहते थे कि 'भारत की आत्मा उसके गाँवों में निवास करती है।' आज़ादी के समय भारत अधिकांशत: किसानों और मजदूरों का देश था। इसकी करीब तीन-चौथाई आबादी कृषि कार्य में लगी थी और देश का

अध्याय

16

भारत : चीन व पाकिस्तान से युद्ध (India : War with China and Pakistan)

वर्तमान समय में भारत विश्व के प्रभावशाली देशों में से एक है। दक्षिण एशिया में स्थित भारत की भौगोलिक अवस्थिति भी ऐसी है कि यह विश्व के सभी देशों के अलावा पड़ोसी देशों के लिये भी काफी महत्त्व रखता है। भारत के दो निकटतम एवं अहम पड़ोसी राष्ट्र पाकिस्तान और चीन हैं। हालाँकि भारत का इन दोनों राष्ट्रों के साथ सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध बेहतर हैं, परंतु सीमा विवाद जैसे मुद्दों के कारण टकराव की संभावना बनी रहती है।

16.1 भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि एवं घटनाक्रम *(Background and Events of India-China War)*

सही मायने में देखा जाए तो 1950 के पूर्व भारत और चीन के बीच राजनीतिक संबंध निम्नस्तरीय थे, लेकिन सांस्कृतिक स्तर पर दोनों देशों के बीच अत्यधिक घनिष्ठता थी। भारत से चीन तक बौद्ध धर्म के प्रचार ने सांस्कृतिक संबंधों की स्थापना की थी। प्राचीन सिल्क व्यापार के आधार पर दोनों देशों के बीच व्यापारिक संबंध भी स्थापित हुए थे। बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के दौरान कई भारतीयों ने चीन की यात्रा की तथा कई चीनी छात्रों ने नालंदा विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की। दसवीं शताब्दी में बौद्ध धर्म के पतन के बाद भी दोनों देशों के संबंधों में घनिष्ठता बनी रही। भारत-चीन संबंधों को सबसे गहरा आघात तब लगा जब एशिया में साम्राज्यवाद व उपनिवेशवाद का विस्तार हो गया।

1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद और सन् 1949 में चीन के जनवादी लोकतंत्र की स्थापना के बाद दोनों देशों ने विदेश नीति के बदले घरेलू विकास को प्राथमिकता दी। दोनों देशों ने परस्पर राजनयिक संबंधों की भी स्थापना की, लेकिन दोनों देशों के बीच वैचारिक मतभेद भी विद्यमान थे। जहाँ चीन सोवियत संघ के साथ मिलकर अमेरिका की साम्राज्यवादी नीतियों का विरोध कर रहा था वहीं भारत ने इन दोनों महाशक्तियों के साथ समान दूरी बनाकर गुटनिरपेक्षता की संकल्पना पर कार्य करना प्रारंभ किया। वैचारिक मतभेद के बावजूद दोनों देशों ने शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिये पंचशील समझौता किया। इस दौरान दोनों देशों के राजनीतिक संबंध में कुछ सुधार आया तथा इसी प्रकार के माहौल में 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' का नारा दिया गया। लेकिन 1954 में ही चीन ने अक्साई चिन को अपना भू-भाग बता दिया तथा वहाँ से एक सड़क का निर्माण करके मतभेदों को और गंभीर बना दिया। भारत ने यह स्पष्ट कर दिया था कि तिब्बत के क्षेत्र अथवा संप्रभुता पर उसका कोई दावा नहीं था लेकिन उसके व्यापार को बाधित नहीं किया जाना चाहिये। मैकमोहन रेखा को भी चीन ने कभी भी अंतर्राष्ट्रीय सीमा के रूप में मान्यता नहीं दी। सीमा-विवाद के कारण ही दिन-प्रतिदिन भारत-चीन के बीच 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' का रिश्ता 'हिंदी-चीनी बाय-बाय' के रूप में बदलता चला गया। चीन ने भारतीय संप्रभुता वाले एक बड़े क्षेत्र पर अपना दावा करके इस समस्या को और गंभीर बना दिया।

आज़ादी के बाद भारत ने अपनी स्वतंत्र विदेश नीति बनाते हुए अपने पड़ोसी देशों के साथ मित्रतापूर्ण संबंध बनाए रखने की कोशिश की और चीन के संबंध में भी इस नीति का पालन किया। इधर सीमा विवाद को लेकर दोनों देशों के बीच पहले से ही गर्मी थी। इस बीच तिब्बत की समस्या भी बढ़ने लगी थी। तिब्बत पर चीन द्वारा अधिकार कर लेने के बाद चीनी सैनिकों व हान समुदाय के लोगों का भी हस्तक्षेप तिब्बत में बढ़ता ही जा रहा था। इन हस्तक्षेपों के विरोध में पूर्वी तिब्बत के संपाओं ने सशस्त्र विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को चीन ने सफलतापूर्वक दबा दिया। अब तिब्बत के दैवीय शासक दलाई लामा पर भी चीन का दवाब बढ़ने लगा तथा दैवीय शासक इस समस्या का कोई समाधान न निकलता देख भारत में राजनीतिक शरण का अवसर तलाशने लगे। भारत सरकार द्वारा इसे स्वीकार कर लिये जाने के बाद दैवीय शासक अपने हज़ारों समर्थकों के साथ रात्रि प्रहर में चुपचाप भारत आ गए। भारत सरकार द्वारा दलाई लामा को राजनीतिक शरण प्रदान की गई थी, किंतु उन्हें भारत भूमि से किसी प्रकार की राजनीतिक गतिविधियाँ करने तथा 'निर्वासित सरकार' बनाने की इजाज़त नहीं दी गई थी। नेहरू ने उन्हें बातचीत के द्वारा तिब्बत समस्या का समाधान निकालने की सलाह दी तथा इस कार्य में भारत सरकार द्वारा दलाई

अध्याय
17

स्वतंत्र भारत में भूमि-सुधार
(Land Reforms in Independent India)

17.1 ब्रिटिश भारत में भूमि अधिकार प्रणाली *(Land Tenure System in British India)*

उपनिवेशवाद का भारतीय कृषि पर बड़ा ही घातक प्रभाव पड़ा। यह घटना उस समय की है, जब किसी भी अन्य प्राक्-औद्योगिक समाज के समान भारतीय कृषि भी देश के कुल उत्पादन में पूरी तरह प्रभुत्वकारी स्थिति में थी। उपनिवेशवाद ने बिना नई गतिशील शक्तियों को प्रवृत्त किये परंपरागत भारतीय-खेती के आधार को बर्बाद कर दिया। इस दौरान कृषि के वाणिज्यीकरण और किसानों के बीच विभेदीकरण की प्रक्रिया जोरों से चल रही थी। भारतीय कृषि व समाज भी संक्रमणकालीन दौर से गुजर रहा था, लेकिन भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह संक्रमणकालीन दौर भारतीय कृषि व समाज के उत्थान की ओर नहीं था।

औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत भारतीय कृषि में कुछ खास विशेषताएँ उभरीं। अंग्रेजों ने अपने हितों के अनुसार अलग-अलग समय में तथा अलग-अलग क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न भू-राजस्व प्रणाली, जैसे- स्थायी बंदोबस्त, रैयतवाड़ी तथा महालवाड़ी व्यवस्था को अपनाया। इसके अन्य परिणाम चाहे जो रहें हो, किंतु इसका एक निश्चित परिणाम था- भारतीय कृषकों का अत्यधिक शोषण।

ज़मींदारी व्यवस्था *(Zamindari system)*

ज़मींदारी व्यवस्था के अंतर्गत ज़मींदार एवं सरकार के बीच सीधा संबंध स्थापित करने का प्रयास किया गया था। इस व्यवस्था की निम्नलिखित विशेषताएँ थीं–

(i) यह व्यवस्था मुख्य रूप से उत्तर भारत में प्रचलित थी। इसमें सीधे कृषकों से भू-राजस्व संबंधी समझौते नहीं करके प्रभावशाली किसानों से समझौते किये गए, जो स्वयं तो खेती नहीं करते थे, परंतु कृषकों से भू-राजस्व की वसूली कर उसका तयशुदा हिस्सा सरकार को देते थे। इन लोगों को ज़मींदार कहा गया।

(ii) इस व्यवस्था में ज़मींदारों को भूमि पर स्वामित्व दिया गया पर इसमें स्वामित्व का आधार समय पर भू-राजस्व की अदायगी करना था। समय पर राजस्व नहीं अदा करने से ऐसे ज़मींदार को बेदखल कर भू-स्वामित्व किसी और को दिया जा सकता था।

(iii) कृषकों को मात्र भू-किराएदार की स्थिति प्रदान की गई तथा भूमि पर उनके अधिकार को मान्यता नहीं दी गई। कृषकों के वन चारागाह आदि पर अधिकार एवं गांव के तालाबों आदि में मत्स्य पालन के अधिकारों को भी समाप्त कर दिया गया।

(iv) ज़मींदार भू-राजस्व अदा करने में विफल रहने वाले कृषक को उसकी भूमि व संपत्ति से बेदखल भी कर सकता था। प्रायः भू-राजस्व वसूली का काम अधिकारियों व अधीनस्थों को ही सौंपा जाता था।

(v) ज़मींदारी व्यवस्था के एक अन्य प्रकार के रूप में जागीरदारी व्यवस्था का विकास हुआ, जिसमें शासक भूमि की जिम्मेदारी अपने अधीनस्थ सामंतों के ज़िम्मे छोड़ देते थे। इसको (सामंत) जागीरदार को लगान एवं नज़राना पेश करने के अतिरिक्त कुछ प्रशासनिक व सैन्य सेवाएँ भी उपलब्ध करानी होती थीं। ऐसी व्यवस्था राजस्थान, हैदराबाद आदि रियासतों में प्रचलित थी।

रैयतवाड़ी व्यवस्था *(Ryotwari system)*

(i) रैयतवाड़ी व्यवस्था में मध्यस्थों की भूमिका नहीं होती थी, क्योंकि कृषक अपनी भूमि का स्वयं मालिक होता था तथा वह सीधे सरकार से भू-राजस्व संबंधी करार करता था।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456